कसायपाहुडं भाग-8 (फोल्डर नं. 001414)

मुख्य टाइटल
प्रकाशककी ओरसे
विषय-सूची
मङ्गलाचरण ----1
बन्धकके दो अनुयोगद्वारोंकी सूचना----2
बन्धका स्वरूप----2
संक्रमका स्वरूप----2
संक्रमको बन्ध संज्ञा प्राप्त होनेका कारण----2
अकर्मबन्धका स्वरूप ----2
कर्मबन्धका स्वरूप कह कर उसे संक्रम संज्ञा प्राप्त होनेके कारणका निर्देश----2
उक्त दोनों अधिकारों के कहनकी प्रतिज्ञा ----3
इस विषयमें सूत्रगाथा ----3
गाथाके पदोंका व्याख्यान ----4
बन्ध अनुयोगद्वारकी सूचनामात्र ----6
संक्रम अनुयोगद्वार
संक्रमके चार प्रकारके अवतारके निरूपणकी सूचना ----6
प्रथम प्रकार उपक्रम और उसके पाँच प्रकार ----7
उपक्रम आदि पाँचका विशेष व्याख्यान----7
द्वितीय प्रकार निक्षेपका विचार----8
तृतीय प्रकार नयके आश्रयसे निक्षेपकी मीमांसा ----8
निक्षेपार्थका विशेष विचार ---- 11
नोआगमद्रव्यसंक्रमके दो भेद और उनकी मीमांसा ---- 12
प्रकृतमें उपयोगी कर्मद्रव्यसंक्रमके चार भेद ---- 14
प्रकृतिसंक्रमके दो भेद
1 प्रकृतिसंक्रम
प्रकृतिसंक्रमके कथनकी प्रतिज्ञा---- 16
इस विषयमें उपयोगी तीन गाथाएँ और उनका व्याख्यान ---- 16
उक्त गाथाओंका पदच्छेद---- 18
उपक्रमके पाँच प्रकार ---- 18
चारप्रकारका निक्षेप ---- 19
नाम और स्थापनानिक्षेपको पृथक् न कहनेके कारणका निर्देश ---- 19
द्रव्यादि चार निक्षेपों का स्पष्टीकरण ---- 19
निक्षेपार्थको स्पष्ट करनके किए नयविधिका निरूपण---- 20
कर्मद्रव्यप्रकृतिसंक्रमके विषयमें आठ प्रकारके निर्गमोंकी मीमांसा---- 20
एकैकप्रकृतिसंक्रमका व्याख्यान ---- 26
उसके विषयमें 24 अनुयोगद्वारोंकी सूचना और उनका नामनिर्देश---- 26

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुत्कीर्तना ---------- 26
सर्व और नोसर्वसंक्रम ---------- 27
उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टसंक्रम ---------- 27
जघन्य और अजघन्यसंक्रम ---------- 27
सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुवसंक्रम ---------- 28
स्वामित्व ---------- 28
एक जीवकी अपेक्षा काल ---------- 34
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर ---------- 46
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय ---------- 52
भागाभाग ---------- 54
परिमाण ---------- 56
क्षेत्र ---------- 56
स्पर्शन ---------- 57
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल ---------- 59
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ---------- 62
सन्निकर्ष ---------- 63
भाव ---------- 73
अल्पबहुत्व ---------- 73
प्रकृतिस्थानसंक्रम
प्रकृतिस्थानसंक्रम कहने की प्रतिज्ञा ---------- 81
इस विषयमें सूत्र समुत्कीर्तना अर्थात् 32 सूत्रगाथाएँ ---------- 81
उक्त गाथाओंके विषयकी सूचना ---------- 87
प्रकृतिस्थानसंक्रमविषयक अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश ---------- 88
स्थानसमुत्कीर्तनामें आई हुई एक गाथा और उसका व्याख्यान ---------- 89
कौन प्रकृतिस्थान प्रकृतिसंक्रमस्थान है और कौन नहीं है इसका सकारण निर्देश ---------- 91
प्रकृतिस्थानप्रतिग्रहाप्रतिग्रहप्ररूपणा ---------- 114
किस संक्रमकस्थानके कौन प्रतिग्रहस्थान हैं इस बातका निर्देश ---------- 123
संक्रमस्थानोंके अनुसन्धान करनकेके उषायोंका निर्देश ---------- 144
आनुपूर्वी-अनानुपूर्वीसंक्रमस्थानोंका निर्देश ---------- 144
दर्शनमोहनीयके सद्भावमें प्राप्त होनेवाले और उसके अभावमें प्राप्त होनेवाले संक्रमस्थानोंका निर्देश ---------- 145
उपशामक और क्षपकसम्बन्धी संक्रमस्थानोंका निर्देश ---------- 145
मार्गणास्थानोंमें संक्रमस्थान आदिके जाननेकी सूचना ---------- 147
गुणस्थानोंमें संक्रमस्थान आदिके जाननकी सूचना करके कालानुयोगद्वारका संकेत ---------- 148
गतिमार्गणाके अवान्तर भेदोंमें संक्रमस्थानोंका प्रमाणनिर्देश ---------- 149
मनुष्यगतिमें सब संक्रमस्थान होते हैं इसका निर्देश ---------- 150
एकेन्द्रियादि असंज्ञी पञ्चेन्द्रियोंमें कितने संक्रमस्थान होते हैं इसका निर्देश ---------- 150
गतिमार्गणामें प्रतिग्रहस्थानों और तदुभयस्थानोंके जाननेकी सूचना ---------- 150

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व और संयममार्गणामें उक्त विषयका विचार ---------- 152
लेश्यामार्गणामें उक्त विषयका विचार ---------- 153
वेदमार्गणामें उक्त विषयका विचार ---------- 154
कषायमार्गणामें उक्त विषयका विचार ---------- 157
ज्ञानमार्गणामें उक्त विषयका विचार ---------- 159
भव्य और आहारमार्गणामें उक्त विषयका विचार ---------- 160
वेद और कषायमार्गणामें शून्यस्थानोंका निर्देश ---------- 161
सत्कर्मस्थानोंका निर्देश ---------- 163
बन्धस्थानोंका निर्देश ---------- 163
सत्कर्मस्थानोंमें संक्रमस्थानोंका विचार ---------- 163
बन्धस्थानोंमें संक्रमस्थानोंका विचार ---------- 168
बन्धस्थानों और सत्त्वस्थानोंमें संक्रमस्थानोंका विचार ---------- 172
सत्कर्मस्तानोंमें बन्धस्थानों और संक्रमस्थानोंका विचार ---------- 174
बन्धस्थानोंमें सत्कर्मस्थानों और संक्रमस्थानोंका विचार ---------- 175
संक्रमस्थानोंमें बन्धस्थानों और सत्कर्मस्थानोंका विचार ---------- 175
शेष अनुयोगद्वारोंका दो गाथासूत्रों द्वारा नामनिर्देश ---------- 176
स्थानसमुत्कीर्तना ---------- 177
प्रकृतमें सर्वसंक्रमसे लेकर अजघन्य संक्रम तकके अनुयोगद्वार क्यों सम्भव नहीं हैं इसका निर्देश ---------- 178
सादि आदि चारका निर्देश ---------- 179
स्वामित्व ---------- 179
एक जीवकी अपेक्षा काल ---------- 181
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर ---------- 198
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय ---------- 210
भागाभाग ---------- 213
परिमाण ---------- 214
क्षेत्र ---------- 214
स्पर्शन ---------- 215
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल ---------- 216
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ---------- 218
सन्निकर्ष ---------- 221
अल्पबहुत्व ---------- 222

भुजगार प्रकृति संक्रम

भुजगारके तेरह अनुयोगद्वार ---------- 229
समुत्कीर्तना ---------- 229
स्वामित्व ---------- 229
एक जीवकी अपेक्षा काल ---------- 230
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर ---------- 231

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय---------- 232
भागाभाग---------- 232
परिमाण---------- 233
क्षेत्र ---------- 233
स्पर्शन---------- 233
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल---------- 234
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर---------- 235
भाव ---------- 235
अल्पबहुत्व ---------- 235
पदनिक्षेप प्रकृतिसंक्रम
पदनिक्षेपके तीन अनुयोगद्वार ---------- 236
समुत्कीर्तना---------- 236
स्वामित्व---------- 237
अल्पबहुत्व ---------- 238
वृद्धि प्रकृतिसंक्रम
वृद्धिके तेरह अनुयोगद्वार---------- 239
समुत्कीर्तना---------- 239
स्वामित्व---------- 239
एक जीवकी अपेक्षा काल---------- 239
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर व शेषकी सूचना---------- 240
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय---------- 240
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल---------- 240
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर---------- 240
भाव ---------- 240
अल्पबहुत्व ---------- 240
स्थितिसंक्रम
स्थितिसंक्रमके दो भेद---------- 242
स्थितिसंक्रम और स्थितिअसंक्रमकी व्याख्या ---------- 242
अपकर्षणस्थितिसंक्रमका स्वरूप ---------- 243
उत्कर्षणस्थितिसंक्रमका स्वरूप ---------- 253
अद्धाच्छेदकी सूचना ---------- 262
मूलप्रकृतिस्थितिसंक्रम
मूलप्रकृतिस्थितिसंक्रमविषयक अनुयोगद्वारोंकी सूचना---------- 262
अद्धाच्छेदके दो भेद ---------- 263
उत्कृष्ट अद्धाच्छेद ---------- 263
जघन्य अद्धाच्छेद ---------- 263
सर्व अनुयोगद्वारसे लेकर अजघन्य अनुयोगद्वार तक अनुयोगद्वारोंको स्थितिविभक्तिके समान जाननेकी सूचना---------- 264

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा ---------- 264
स्वामित्व के दो भेद ---------- 265
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम स्वामित्व ---------- 265
जघन्य स्थितिसंक्रम स्वामित्व ---------- 265
एक जीवकी अपेक्षा कालके दो भेद ---------- 267
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम काल ---------- 267
जघन्य स्थितीसंक्रम काल---------- 268
अन्तरानुगमके दो भेद---------- 272
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 272
जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 273
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयके दो भेद ---------- 275
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम भंगविचय ---------- 275
जघन्य स्थितिसंक्रम भंगविचय---------- 276
भागाभागके दो भेद ---------- 277
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम भागाभाग---------- 277
जघन्य स्थितिसंक्रम भागाभाग ---------- 277
परिमाणके दो भेद---------- 277
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम परिमाण ---------- 277
जघन्य स्थितिसंक्रम परिमाण ---------- 278
क्षेत्रके दो भेद---------- 278
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम क्षेत्र ---------- 278
जघन्य स्थितिसंक्रम क्षेत्र---------- 279
स्पर्शनके दो भेद ---------- 279
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम स्पर्शन---------- 279
जघन्य स्थितिसंक्रम स्पर्शन ---------- 282
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल के दो भेद---------- 284
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम काल ---------- 284
जघन्य स्थितिसंक्रम काल ---------- 285
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरके दो भेद ---------- 287
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 287
जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 288
भाव ---------- 288
अल्पबहुत्वके दो भेद---------- 288
स्तिथिसंक्रम अल्पबहुत्वके दो भेद ---------- 288
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व ---------- 289
जघन्य स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व ---------- 289
जीव अल्पबहुत्वके दो भेद ---------- 289
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम जीव अलप्बहुत्व ---------- 289

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जघन्य स्थितिसंक्रम जीव अल्पबहुत्व ---------- 290
भुजगारस्थितिसंक्रम
भुजगारके तेरह अनुयोगद्वारोंकी सूचना---------- 290
समुत्कीर्ता ---------- 290
स्वामित्व ---------- 291
एक जीवकी अपेक्षा काल---------- 291
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर---------- 295
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय---------- 295
भागाभाग---------- 297
परिमाण---------- 297
क्षेत्र-स्पर्शन---------- 297
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल---------- 297
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर---------- 297
भाव ---------- 297
अल्पबहुत्व ---------- 297
पदनिक्षेप स्थितिसंक्रम
पदनिक्षेपके तीन अनुयोगद्वारोंकी सूचना ---------- 298
समुत्कीर्तना ---------- 298
स्वामित्वके दो भेद---------- 298
उत्कृष्ट ---------- 298
जघन्य ---------- 299
अल्पबहुत्व ---------- 299
वृद्धि स्थितिसंक्रम
वृद्धिके तेरह अनुयोगद्वारोंकी सूचना---------- 299
समुत्कीर्तना ---------- 299
स्वामित्व ---------- 299
एक जीवकी अपेक्षा काल---------- 300
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर---------- 302
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयसे लेकर भाव तकके अनुयोगद्वारोंको स्थितिविभक्तिके समान जाननेकी सूचना---------- 303
अल्पबहुत्व ---------- 303
स्थानप्ररूपणा ---------- 303
उत्तरप्रकृतिस्थितिसंक्रम
उसके विषयमें 24 अनुयोगद्वारोंकी व भुजगारादिककी सूचना ---------- 304
अद्धाच्छेदके दो भेद ---------- 304
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अद्धाच्छेद---------- 304
जघन्य स्थितिसंक्रम अद्धाच्छेद ---------- 305
सर्वादि अनुयोगद्वारोंको स्थितिविभक्तिके समान जाननेकी सूचना ---------- 310

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वामित्व ---------- 311
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमस्वामित्व ---------- 311
जघन्य स्थितिसंक्रम स्वामित्व ---------- 312
एक जीवकी अपेक्षा काल ----------
---------- 323
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम काल ---------- 326
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर ---------- 332
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 332
जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 333
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय ---------- 336
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम भंगविचय ---------- 336
जघन्य स्थितिसंक्रम भंगविचय ---------- 337
भागाभाग आदिको स्थितिविभक्तिके समान जानने की सूचना ---------- 338
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल ---------- 338
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम काल ---------- 338
जघन्य स्थितिसंक्रम काल ---------- 338
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ---------- 341
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 341
जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर ---------- 341
सन्निकर्ष ---------- 342
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम सन्निकर्ष ---------- 342
जघन्य स्थितिसंक्रम सन्निकर्ष ---------- 343
भाव ---------- 346
अल्पबहुत्व ---------- 346
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व ---------- 346
जघन्य स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व ---------- 348
भुजगार स्थितिसंक्रम
भुजगारसंक्रम ---------- 359
अर्थपद ---------- 360
भुजगार आदि पदोंका अर्थ ---------- 360
इस विषयमें तेरह अनुयोगद्वारोंकी सूचना ---------- 360
समुत्कीर्तना ---------- 360
स्वामित्व ---------- 360
एक जीवकी अपेक्षा काल ---------- 362
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर ---------- 372
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय ---------- 376
भागाभाग ---------- 378
परिमाण ---------- 378

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेत्र और स्पर्शन ---------- 378
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल---------- 379
नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर ---------- 381
भाव ---------- 384
अल्पबहुत्व ---------- 384
पदनिक्षेप स्थितिसंक्रम
उसमें तीन अनुयोगद्वार---------- 388
समुत्कीर्तना---------- 388
उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम समुत्कीर्तना---------- 388
जघन्य स्थितिसंक्रम समुत्कीर्तना ---------- 388
स्वामित्व---------- 389
ओघ उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम स्वामित्व---------- 389
ओघ जघन्य स्थितिसंक्रम स्वामित्व---------- 395
ओघादेश उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम स्वामित्व ---------- 397
ओघादेश जघन्य स्थितिसंक्रम स्वामित्व ---------- 399
अल्पबहुत्व ---------- 400
वृद्धि स्थितिसंक्रम
उसमें तीन अनुयोगद्वार---------- 401
वृद्धिका स्वरूप---------- 402
अनुयोगद्वारोंके नाम और उनका स्वरूप---------- 402
ओघसमुत्कीर्तना---------- 402
प्ररूपणा---------- 410
एक जीवकी अपेक्षा काल---------- 411
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर---------- 414
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय---------- 415
भागाभाग---------- 416
परिमाण---------- 416
क्षेत्र ---------- 417
स्पर्शन---------- 418
नानाजीवोंकी अपेक्षा काल---------- 418
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर---------- 419
भाव ---------- 420
अल्पबहुत्व ---------- 420
स्थितिसंक्रमस्थान---------- 428

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org